AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:3
June 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटकों में वर्णित समाज

Neeraj Kumar
Research Scholar
Hindi Department University of Delhi
Dr. (Prof) Gyantosh Kumar Jha
Principal
ARSD College University of Delhi

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

भारतेन्दु हरिश्चंद्र (9 सितंबर, 1850 से 6 जनवरी 1885) को आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया जाता है। उन्होने हिन्दी कविता, नाटक, निबंध, पत्रकारिता और अनुवाद आदि में अपनी विशेष छाप छोड़ी। उन्होने आधुनिक हिन्दी भाषा के साहित्यिक विकास का कार्य पूरी ज़िम्मेदारी से निभाया। वे ताउम्र भारतीय समाज में आ रहे बदलावों को अपने साहित्य व पत्रकारिता के के माध्यम से पाठकों के सामने लाते रहे। उनकी रचनाएँ 1850 से 1900 के बीच की सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रमुखता से प्रस्तुत करती है। जहां उनकी पत्रकारिता में भारतीय समाज का आंकलन राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक मापदण्डों पर है; वहीं उनके द्वारा सृजित नाटकों में भारतीय जनजीवन का सामाजिक व सांस्कृतिक चरित्र प्रस्तुत हुआ है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने आधुनिक हिन्दी रंगमंच की व्यवस्थित शुरुआत की। उन्होंने 'नाटक अथवा दृश्यकाव्य'(1883 ई०) नामक खोजपरक आलोचनात्मक निबंध लिख भारतीय, पाश्चात्य और लोकनाट्य को सम्मिश्रित कर पहला हिन्दी नाट्यशास्त्र गढा। जिसमें नाटक करने के उद्देश्यों को भली-भांति रेखांकित किया गया। नाटक के उन्होंने पांच मुख्य उद्देश्य माने- श्रृंगार, हास्य, कौतुक, समाज सुधार और देश-वत्सलता। ये गुलाम देश की आवश्यकतायें थीं जो आगामी भविष्य के लिए भी अपना मानक प्रस्तुत की। इस समय उद्देश्यपूर्ण नाटकों के प्रदर्शन पर ज्यादा जोर दिया गया। नाटककारों का विशेष बल प्रेक्षकों के विनोद के बजाय प्रेरणा देने पर ज्यादा रहा। इस निबंध में प्राचीन संस्कृत रंगमंच से लेकर भारतीय लोक नाट्य परंपरा का विश्लेषण उन्होंने किया। इसमें रंगमंच के

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:3
June 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

तत्वों पर उन्होंने विस्तृत विचार प्रस्तुत किए और नाटक के उद्देश्यों को प्रामाणिकता के साथ रंगकर्मियों को पेश करने की बात कही। यह शोधपरक आलेख भारतेन्दु द्वारा हिन्दी नाट्य परंपरा को दी गई एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसके बारे में गणपति चन्द्र गुप्त लिखते हैं- "यदि हम एक ऐसा नाटककार ढूंढें, जिसने नाट्यशास्त्र के गंभीर अध्ययन के आधार पर नाट्यकला पर सैद्धान्तिक आलोचना लिखी हो, जिसने प्राचीन और नवीन, स्वदेशी और विदेशी नाटकों का अध्ययन किया हो, जिसने वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक एवं मौलिक नाटकों की रचना की हो और जिसने नाटकों की रचना ही नहीं, अपितु उन्हें रंगमंच पर खेल कर भी दिखाया हो- इन सब विशेषताओं से सम्पन्न नाटककार हिन्दी में ही नहीं, समस्त विश्व साहित्य में केवल दो चार ही मिलेंगे और उन सबमें भारतेन्दु का स्थान सबसे ऊँचा होगा।"[1]

भारतेन्दु के नाटकों की बहुलता पर विचार करें तो हम पाते हैं कि उन्होंने मौलिक नाटकों के साथ-साथ अनूदित नाटकों की भी एक गंभीर शृंखला प्रस्तुत की। भले ही उन्होंने अंग्रेजी और बांग्ला भाषा के प्रसिद्ध नाटकों का अनुवाद हिन्दी भाषा में किया हो; परंतु नाटकों में उपस्थित परिस्थितियाँ हिन्दी समाज की ही रही। रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ' पुस्तक में लिखते हैं- "अनुवादित और अपने रचे हुए नाटकों, दोनों से ही भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य की विशेष सेवा की। उनकी भाषा सारस और चुटीली है, संस्कृत-गर्भित न होकर वह अपनी ब्रजभाषा की मिठास लिए हुए हैं.... हर नाटक लिखने के पीछे एक उद्देश्य है। नाटक की कथावस्तु उनके अपने जीवन से ली गई है। 'सत्य हरिश्चंद्र' के हरिश्चंद्र में उन्होंने अपने जीवन की करुणा उड़ेल दी है, 'प्रेमजोगिनी' में उन्होंने अपनी परिचित काशी का चित्र खींचा है। जगह-जगह उनके रोमांटिक छंद उनके नाटकों को काव्यमय बना देते हैं और जब चाहते हैं तो उनका गद्य भी कविता की तरह सरस और उद्दात हो जाता है। वह हास्य-व्यंग्य के धनी हैं और उनका आलोचनात्मक यथार्थवाद प्रहसनों और हास्य-प्रधान दृश्यों में खूब निखरा है।

[1] हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ गणपति चंद्र गुप्त, पृष्ठ सं- 366

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:3
June 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

भारतेन्दु ने नाटकों को देशभक्ति की भावना जगाने और चरित्र-निर्माण करने का साधन बनाया, यह उनकी सफलता का रहस्य है।"[2]

रामचन्द्र तिवारी लिखते हैं कि- "भारतेंदु ने कई छोटे-बड़े मौलिक-अमौलिक नाटकों की सृष्टि की। ये सामाजिक, राजनैतिक, पौराणिक एवं प्रेम तत्त्व संबंधी, सभी प्रकार के हैं। भारतेन्दु की यह देन हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। समय को पहचानने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। उन्होने हिंदी के साहित्यिक नाटकों की परंपरा को जन्म दिया। युग की नवीन चेतना को अभिव्यक्ति दी।"[3]

उपरोक्त महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण ही हिन्दी साहित्य के इस गौरवशाली काल-खंड को 'भारतेन्दु-युग' के नाम से जाना जाता है। इस समय नाट्य-लेखन और प्रदर्शन दोनों में ही अद्भुत विकास हुआ। यह पत्रकारिता और रंगमंच के माध्यम से नई वैचारिक क्रान्ति को दिशा प्रदान करने वाला समय था; जिसके कारण इसे पुनर्जागरण का समय भी कहा गया।

भारतेंदु ने हिन्दी में साहित्यिक नाटकों की परंपरा को जन्म दिया। उन्होंने युग की नवीन चेतना को अभिव्यक्ति दी। रंगमंच अब केवल व्यावसायिक कमाई का जरिया नहीं रह गया। इस तरह पारसी थियेटर से अलग राजनीतिक और सामाजिक औचित्य फलीभूत होने लगे। यह कोई एकल अभिव्यक्ति का दौर नहीं था, इस दौर के नाटककार सामाजिक प्रतिबद्धता में विश्वास रखने वाले लोग थे। अतः उन्होंने देशव्यापी पत्रकारिता और रंगमंच का आंदोलन छेड़ दिया। जिसमें कई लेखक, पत्रकार और नाटककार जुड़े। जिसे आज लोग भारतेंदु-मंडल के रूप में जानते हैं। जिनमें श्रीनिवास दास, किशोरीलाल गोस्वामी, राधाकृष्ण दास, बालकृष्ण भट्ट, काशीनाथ खत्री आदि का नाम प्रमुख है। इस समग्र आंदोलन में नाटककारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही। ये नाटक को समाज के कल्याण का माध्यम बनाना चाहते थे।

[2] रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2019, पृष्ठ संख्या-136
[3] हिंदी का गद्य-साहित्य - डॉ रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ सं - 350

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:3
June 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

भारतेन्दु द्वारा लिखित नाटकों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है- अनूदित, मौलिक और अपूर्ण। उनके अनूदित नाटकों को अनुवादित नाटक कहना कमतर आंकना होगा। क्योंकि उन्होंने दूसरी भाषाओं के नाटकों का अपने सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में रूपान्तरण किया है। उनके नाटक हु-ब-हु अनुवाद की श्रेणी में नहीं रखे जा सकते हैं।

भारतेन्दु का पहला नाटक 'विद्यासुंदर'(1868) यतीन्द्रमोहन के बांग्ला नाटक का अनुवाद है। यह विद्यासुंदर की प्रेमकथा पर केन्द्रित है। दूसरा नाटक 'पाखंड विडंबन'(1872) कृष्ण मिश्र के संस्कृत नाटक 'प्रबोद्धचंद्रोदय' के तृतीय अंक का अनुवाद है। यह प्रतीकात्मक कथा पर आधारित एक रूपक है, जिसमें धार्मिक दुराचार और आडंबरों को दर्शाया गया है। तीसरा नाटक महाभारत कथा पर आधारित कांचन कवि की रचना का अनुवाद 'धनंजय विजय'(1873) है जिसमें पांडवों के पुत्र अभिमन्यु और उत्तरा के विवाह का वर्णन दर्शाया गया है। चौथा नाटक 'कर्पूर मंजरी'(1875) है जिसमें कर्पूर मंजरी और राजा चन्द्रपाल के बीच आकर्षण, प्रेम और विवाह का चित्रण किया गया है। 'मुद्रारक्षस' भारतेन्दु द्वारा अनूदित नाटकों में सबसे सफल नाटक है। यह विशाखदत्त की रचना पर आधारित है। इस नाटक में नन्द के महामंत्री राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री बनाने के द्वन्द्वात्मक प्रकरण को दर्शाया गया है। संवाद और भाषा के माध्यम से भारतेन्दु ने राक्षस और चाणक्य दोनों के उद्दात छवि को रंगमंच पर अंकित करने का प्रयास किया है। 'दुर्लभ बंधु'(1880) शेक्सपियर के 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का भारतीय एडप्टेशन है। यह एक अपूर्ण रचना है जिसमें ईसाई और यहूदी संघर्ष की तरह आर्यों और जैनों के संघर्ष को दिखाया गया है।

'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'भारत दुर्दशा','अंधेर नगरी', 'सत्य हरिश्चंद्र' आदि भारतेन्दु के महत्वपूर्ण नाटक हैं। 'सत्य-हरिश्चंद्र'(1875 ई०) 'चंडकौशिक' पर आधारित एक आख्यानपरक नाटक है, जिसमें उन्होंने सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र को आधार बना एक सामाजिक आदर्श खड़ा करना चाहा है। अपने अपूर्ण नाटिका 'प्रेमजोगिनी' (1875 ई०) में भारतेन्दु ने काशी की वास्तविक स्थिति तथा अपने जीवन के कुछ संकेत दिए हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:3
June 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

भारतेन्दु ने कई मौलिक नाटकों की रचना की है। जो हैं- 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति'(1873), 'सत्य हरिश्चंद्र'(1875), 'श्री चंद्रावली'(1876), 'विषस्य विषमौषधम'(1876), 'भारत जननी'(1877), 'भारत दुर्दशा'(1880), 'नीलदेवी'(1881), 'अंधेर नगरी'(1881), 'प्रेमजोगिनी'(1875), 'सती प्रताप'(1883)।

'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' प्रहसन है जिसमें मांसाहार, मद्यपान, पशुबलि तथा आडंबरों को मानने वाले के ऊपर व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है। इसके जरिये नाटककार ने समाज में व्याप्त धार्मिक कुरीतियों के ऊपर प्रश्न खड़े किए हैं। 'सत्य हरिश्चंद्र' राजा हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा को समाज के सामने प्रस्तुत करने के विचार से लिखा गया है जिसका उद्घोष "चंद्र टरै सूरज टरै" की सामाजिक मान्यता को समाज के अन्तःमन में विकसित करना था। इस नाटक के ऊपर विवाद है कि यह नाटक बांगला नाटक का अनुवाद है जिसका खंडन डॉ रामविलास शर्मा करते हुए लिखते हैं- "भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भले ही क्षेमेश्वर या उनके अनुवर्ती किसी बांग्ला नाटककार से सहायता ली हो, 'सत्य हरिश्चंद्र की आत्मा हरिश्चंद्र की है, उसका रूप विन्यास उसका भाषा का लालित्य, उसके सारस पद्य सब हरिश्चंद्र के हैं। इस नाटक की प्रेरणा भारतेन्दु की नवीन देशभक्ति है, जो उन्हें रितिकालीन शृंगार की परंपरा से हटाकर नवयुवकों की शिक्षा के लिए नाटक लिखने को बाध्य करती है।"[4] 'विषस्य विषमौषधम' अंग्रेजी व्यवस्था की शोषण नीति और भारतियों की मोहासक्त मानसिकता को दर्शाने वाली एक भाण है। इसमें भारतेन्दु का प्रखर राष्ट्रप्रेम प्रकट हुआ है।

'भारत दुर्दशा' एक नाट्य रासक है। इसमें भारत के गौरवपूर्ण अतीत से तत्कालीन वर्तमान की तुलना की गई है। यह पराधीन भारत की दयनीय आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पतन को दर्शाती है। यह नाटक राजभक्ति और देशभक्ति के बीच के द्वंद्व को उजागर करती है। जहां अंग्रेजों के आने से हुए कुछ बदलाव राष्ट्र के लिए अच्छे साबित होते हुए दर्शाए गए हैं तो वहीं उन्हीं सकारात्मक बदलावों के बीच हो रहे गड़बड़झाले को भी नाटककार ने पेश किया है। जैसे निम्नाकित नाटक की पंक्तियाँ देश में सब भला चंगा हो रहा है परंतु उसकी आड़ में देश की आर्थिक दुर्दशा के कारणों की तलाश अंग्रेजों द्वारा भारत का पैसा विदेश ले जाने की बात की गई है-

"अंग्रेज़ राज सुख साज सजे सब भारी।

[4] रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2019, पृष्ठ संख्या-121

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:3
June 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

पै धन विदेश चली जात इहै अति ख़्वारी।"[5]

इस नाटक में नाटककार ने भारत देश तथा उसकी समस्याओं का मानवीकरण किया है। नाटक के एक-एक पात्र भारतीय जनता की मानसिक स्थिति का सूचक है। पात्रों का नाम इस प्रकार हैं- भारत, निर्लज्जता, आशा, भारतदुर्देव, सत्यानाशक फौजदार, रोग, आलस्य, मदिरा, अंधकार तथा इसके अलावा अलग-अलग क्षेत्रीयताओं- बंगाली, महाराष्ट्र, देशी तथा एडिटर और कवि। अर्थात हम कह सकते हैं कि नाटककार ने भारत के दुर्दशा के कारणों की तलाश यहाँ पेशेगत, क्षेत्रीय और मानसिक सोच में लगे घुन के आधार पर की है। जिसमें लोग यथास्थितिवादी होकर देश के विनाश को होता हुआ केवल देख रहे हैं। जनता की सोच बदलाव करने की नहीं जो जैसा है उसे वैसे ही छोड़ देने की है। तभी तो नाटक में अंतिम इंट्री भारत सौभाग्य की होती है। आशा के मूल में ही भारतीय समाज का इंतजार करता रहता है। यह उस समय के लोगों की सोच का नाटककार के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक विश्लेषण है।

भारतेन्दु का सर्वाधिक प्रदर्शित नाटक 'अंधेर नगरी' है। यह उनकी नाट्यकला का चरमोत्कर्ष है। यह प्रहसन शैली में लिखी गई है। रामविलास शर्मा इसका विश्लेषण करते हुए लिखते हैं- "'अंधेर नगरी चौपट राजा' अंग्रेजी राज की अंधेरगर्दी की आलोचना ही नहीं, वह इस अंधेरगर्दी को खत्म करने के लिए भारतीय जनता की प्रबल इच्छा भी प्रकट करता है.... भारतेन्दु की प्रहसन कला यहाँ अपने चरमोत्कर्ष पर दिखाई देती है।"[6] यह नाटक एक ऐसे राजव्यवस्था का सूचक है जिसमें शासक और जनता एक ही जैसे हैं। मूल्य-अमूल्य का कोई भेद नहीं है। यह समानता की वह पराकाष्ठा है जहां पर गुण-अवगुण की बराबरी एक जैसी है। ऐसे मूर्ख समाज की मूर्खता तभी समाप्त हो सकती है जब कोई सोचने-समझने वाला इस यथास्थिति से निकलने की मानसिकता अपने अंदर पैदा करे। नाटक में महंत

[5] भारतेन्दु हरिश्चंद्र के सम्पूर्ण नाटक, शिल्पायन पेपरबैक्स, संस्करण- 2014, पृष्ठ संख्या-199

[6] रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2019, पृष्ठ संख्या-133

[7] भारतेन्दु हरिश्चंद्र के सम्पूर्ण नाटक, शिल्पायन पेपरबैक्स, संस्करण- 2014, पृष्ठ संख्या-199

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:3
June 2022
Impact Factor:6.3
Subject Humanities

नामक पात्र इसी का सूचक है जिससे मूर्खतापूर्ण शासन व्यवस्था का अंत राजा के फांसी पर चढ़ने से होता है। नाटक के अंत में महंत का अंतिम कथन इस संबंध में बहुत कुछ कह जाता है-

"जहां न धर्म्म न बुद्धि नाह, नीति न सुजान समाज।

ते ऐसेहि आपुहि नसे, जैसे चौपट राज॥"[7]

नाटक की शुरुआत "चौपट राजा / टके सेर भाजी टके सेर खाजा।" से होकर नाटक का अंत राजा की मूर्खतापूर्ण आत्महत्या तक की यात्रा है। इससे यह समझ विकसित होती है कि अगर राजा के द्वारा राज्य की राजनीतिक स्थिति और जनता की मानसिकता भले ही चरम मूर्खतापूर्ण क्यों न हो एकाध समझदार नागरिकों के कारण भी बदलाव संभव है। इसका तुलनात्मक विश्लेषण इस प्रकार भी किया जा सकता है कि 'मुद्रारक्षस' का चाणक्य और 'अंधेर नगरी' का महंत वे सभ्य नागरिक हैं जो अपने बल पर चाहे तो समाज में व्याप्त कुव्यवस्था को एक सिरे से मिटा सकते हैं।

नाटक साहित्य का एक प्रकार है। साहित्य के समान इसका भी उद्देश्य जनता की चित्तवृतियों का संचित विकास करना है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटक इस संदर्भ में समाज के व्यापक सोच को प्रदर्शित भी करते हैं और दर्शकों में मानसिक परिवर्तन का भी कार्य करते हैं।

शोधार्थी

नीरज कुमार

हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय